गर्मियों की छुट्टियाँ

शब्दार्थ : –

बजाजी – कपड़े की दुकान (कपडे का व्यवसाय)

मनियारी – चूड़ी बिंदी की दुकान

नोकदार – नुकीली

पगडंडी – छोटा पतला कच्चा रास्ता (सँकरा मार्ग)

शीतल – ठंडा

स्पर्श – छूना

ध्यानमग्न – ध्यान में लीन होना (अपने आप में खोना)

क) जब बिजली के पंखे नहीं होते थे तो गर्मियों के मौसम में लोग अपना पसीना सूखने के लिए हाथ का पंखा चलते थे , कई जगहों पर खजूर के पत्तों से बने पंखों का इस्तेमाल किया जाता था | धनी या सेठ के घर पर नौकर छत से लटके हुए बहुत बड़े पंखे को रस्सी के सहारे खींचकर हिलाता रहता था |

ख) नंदकिशोर एक गाँव में रहता था | उस गाँव में पाँच –दस घर पहाडों के ऊपर नीचे बने हुए थे | नंदकिशोर ने घर के साथ ही एक दुकान खोल रखी थी | उसमें खाने –पीने का सामान , बजाजी ,मनियारी आदि ग्रामीण लोगों के लिए आवश्यक वस्तुएँ मिल जाया करती थी |

ग) नंदकिशोर का भाई उमाशंकर बी. ए. में पढ़ रहा था | वह गर्मियों की छुट्टियों में नगर से अपने भाई के पास आकर पहाड़ी ग्राम के वातावरण का आनंद लिया करता था |

घ) अत्यधिक गर्मी होने के कारण नंदकिशोर उमाशंकर को एक स्वच्छ नाले में एक स्थान पर खाट डाल कर पढ़ने के लिए कहता जहाँ पानी कम गहरा था | ऊपर वृक्षों की छाया और नीचे पानी बहता रहता था जिस कारण वह स्थान हमेशा ठंडा रहता था |

ड) शंभुनाथ के साथ उमाशंकर ने गाँव में पहाड़ों की सैर करवाई | उसने पहले शंभु को बगीचा दिखाया | जिसमें आड़ू ,खुमानी ,बादाम और अखरोट के पेड़ लगे थे | उन्होंने केले के बगीचे भी देखे और यह जाना की किस प्रकार केलों को पकाया जाता है | फिर वह दोनों पहाड़ी के ऊपर चढ़ गए | उन्होंने पहाड़ी से नीचे का दृश्य देखा और वे मंत्र मुग्ध हो गए |

च) पहाड़ की चोटी से नीचे का दृश्य बहुत ही सुन्दर दिखाई देता था |दूर–दूर छोटे – छोटे मकान बने हुए हैं | सीढ़ीनुमा खेतों में कहीं मक्का और कहीं धान दिखाई दे रहे हैं | सभी ओर हरियाली छाई हुई है | कल–कल करके बहता

हुआ वह नाला ऊपर से कितना सुहावना दिखाई दे रहा है | कई लोग नाले के गहरे जल में नहा –धो भी रहे हैं | कुछ तैर भी रहे हैं | गर्मी की ऋतु में यह पर्वतीय प्रदेश कितना प्यारा लगता है |

छ) गर्मी के मौसम में पर्वतीय प्रदेश स्वर्ग के समान प्रतीत होता है | झरने का स्वच्छ पानी , गाँव का पीसा आटा , स्वच्छ वायु और प्रकृति के रम्य दृश्य सब को मोह लेता है |